

## विचार बिन्दु

सच्चा गुरु अनुभव है। -स्वामी विवेकानंद

## ‘अग्निपथ’ सर्वथा उपयोगी योजना है

जो भी योजना केन्द्र व राज्य सरकारें लागू करना चाहती हैं उनकी मंशा सामान्यतया अच्छी ही होती है, क्योंकि कोई भी सरकार जनता की कोपधान नहीं बनना चाहती। सत्ता में रहने के लिये वह लोकप्रिय भी रहना ही चाहेगी। कमियाँ रहती हैं तो उसकी क्रियाविधि में कुछ योजनाएँ तो ऐसी होती हैं जो सतह पर बड़ी मीठी लगती हैं परंतु जिनका दूरगामी परिणाम सुखद नहीं होता। उदाहरण के लिए मुफ्त सेवाना और मुफ्त वस्तुएँ देने की योजनाएँ देश में मुफ्त क्या कुछ पैदा हो सकती है? नहीं। और यदि सरकारें सब कुछ मुफ्त लुटाती रहें तो देश का बजट ही गड़बड़ा जायगा या फिर करदाताओं पर अधिक टेक्स लागेगा। कुल मिला कर व्यापार जगत तो पुनः सामान्य जनता से ही वसूली कर टेक्स का पुनर्भरण करेगा। हम में से प्रत्येक को अपनी-अपनी सेवा, अपने-अपने परिश्रम व उद्यम से ही कुछ पाने का प्रयास करना चाहिये।

हमारे परिश्रम, हमारे उद्यम, हमारी सेवाओं की गुणात्मकता में निरन्तर वृद्धि का भी प्रयास करना चाहिये। हो यह रहा है कि सामान्य नागरिक की यह भावना बनती चली जा रही है कि जनता से कम काम करो और अधिक से अधिक वसूल करो। हमारे सत्ताधारियों ने मुफ्त बिजली, मुफ्त पानी, कई सस्किडी, मनरेगा कई ऋण और उनकी माफी, मुफ्त नकद राशि जैसी कई योजनाएँ चलाकर भी जनता में आलस्य, कामचोरी, अकर्मण्यता व बेईमानी सिखाये हैं।

विपक्ष ने तो हर योजना को नकारा ही है और यही नहीं घोर हिंसात्मक आंदोलन भी किये हैं और कराये हैं, भले ही उनकी सरकारों में भी ऐसी योजनाएँ बनी हों परंतु लागू न हो पाई हों। इस विरोध का आधार तो केवल स्वार्थ और सत्ता प्राप्ति का प्रयास है। लेकिन जब कुछ बुद्धिजीवी इसका विरोध करते हैं तो क्या वे योजना का गहराई से अध्ययन करके विरोध करते हैं या मात्र जनता की जानकारी और क्षणिक भावावेश के कारण करते हैं। कृषि विधेयक को काला कानून कहने वाले राजनेता व बुद्धिजीवियों की कमी नहीं है, भले ही उन्होंने उसका आद्योपात्त अध्ययन न किया हो। यही हाल शिक्षा नीति व अन्य सुधारों का है। इसका प्रमाण यह है कि कोई यह नहीं बताता कि उनमें खराबी क्या है। बस उसे वापिस ले लो का नारा एक-दूसरे को देखकर लगाते रहते हैं।

पहले तो हमें यह समझना होगा कि प्रत्येक योजना पर राजनेता, आलाअधिकारी व संबंधित विभाग के उच्चतम अधिकारी विचार-विमर्श करते हैं। वहाँ कोई सामान्य मजदूर, कारीगर और मिश्री नहीं बैठता। उनका हानि-लाभ, लोकहित या अहित देखा जाता है। सत्ता के चोट बैंक को और जनता की संभावित प्रतिक्रिया को भी ध्यान में रखा जाता है। अग्निपथ योजना में उच्चतम व शीर्ष राजनेता, प्रशासनिक अधिकारी व सेना के जनरल आदि सहयोगी रहे हैं। विश्व के अन्य देशों की परम्पराओं और रीति-नीति का भी अध्ययन किया जाता है। वहाँ जनता से मजाक कहाने वाले शेखचिल्ली और जोकर नहीं बैठे हैं। परंतु जब विरोध ही उद्देश्य हो तो फिर कुछ भी कहा जा सकता है।

केवल एक बात को पकड़ कर बैठ गये कि चार साल बाद क्या होगा? जरा सोचिये एक विज्ञापन आता है सेना में भरती का जिसमें चार साल का कोर्स है और उसकी फीस चार लाख रु प्रति वर्ष है। क्या प्रवेश हेतु लोग घर और खेत नहीं बेचेंगे। हाँ, यह कोर्स भरती की परीक्षा हेतु है भरती की माट्टी हेतु नहीं। छोड़िये सेना को, सिविल सेवाओं की बात करें। वर्षों तक तैयारी, पढ़ाई, अध्यापक व्यव होता है। आइ.आइ.टी. व मेडिकल हेतु भी लाखों बच्चे लाखों रुपये खर्च करते हैं। क्या सबका आइ.आइ.टी., आइ.आइ.एम. तथा मेडिकल में प्रवेश हो जाता है? शिक्षक बनने के लिये वर्षों से छात्र तैयारी कर रहे हैं, करते हैं, और सफल नहीं हो पाते। पूर्व सत्ताओं के जमाने से कई वकील, इंजीनियर, डॉक्टर, कई अन्य सुशिक्षित व शिक्षक के पात्र आँटे चला रहे हैं, मेहनत-मजदूरी कर रहे हैं, अपने प्रशिक्षण एवं शिक्षण से इतर काम

कर रहे हैं। इस योजना में तो शत प्रतिशत चयित अभ्यासियों को चार साल गहन प्रशिक्षण एवं अनुशासन में रह कर रोजगार भी मिलेगा। इन सैन्य प्रशिक्षितों में से सभी सेनाओं एवं उनके अंगों यथा स्थल, जल व नभ सेना में स्थायी नियुक्ति मिलेगी और उसके बाद शेष अर्द्ध सैन्य बल व पुलिस में खपेंगे। चार वर्ष बाद एक प्रशिक्षित सैन्य शक्ति तैयार होगी जो सेना तथा अर्द्ध सैन्य बल के अलावा सिविल सेवाओं के लिये भी सुरक्षित भंडार का काम करेगा। यह योजना सांप्रदायिक हिंसा, पत्थरबाजी, आतंकवाद आदि को जश बल, जन शक्ति बना कर रोक सकेगी। धीरे-धीरे युवा शक्ति गहन सैन्य प्रशिक्षण से सुसज्जित होकर देश की रक्षा हेतु किसी आपात स्थिति हेतु तैयार रहेगी। अमेरिका में ड्राफ्ट योजना प्रचलित रही और हर युवा अपनी शिक्षा के बाद अनिवार्य रूप से सैन्य प्रशिक्षण में रह कर ही आगे अपने भविष्य का निर्माण करता था। इजरायल में हर युवक व युवती सैन्य प्रशिक्षण से फोलाद हैं, टेक्सी व ट्रैक्टर भी चलता है?

हमारे यहाँ हर जगह दादागिरी व पट्टागिरी की परम्परा चल पड़ी है। राजनीति में पीढ़ी दर पीढ़ी पट्टा रहा। नौकरी में परिश्रम न करना पड़े। बस सरकारी नौकरी मिल जाये, उसका पट्टा मिल जाये, फिर काम तभी करें जब कुछ ऊपरी कमाई का जुगाड़ हो। क्या किसी भी निजी उद्योग में स्थायित्व अनिवार्य है? सरकारी पट्टा कितने लोगों को मिल पाता है। क्या गैर सरकारी नौकरी, व्यवसाय, उद्योग वाले लोग जीते नहीं हैं? फिर ऐसा क्या हुआ कि सारे देश को जलाया गया? बसों, रेलों, थानों व सत्ता पक्ष के राजनेताओं पर आक्रमण किया गया उन्हें जलाया गया, नष्ट किया गया। क्या यही युवा शक्ति है जो सेना में भरती होकर देश की रक्षा करेगी? क्या ये कॉलेज मेंटॉर्स और विपक्षी राजनेताओं के बहकावे में आये? क्या इनमें से अधिकांश विपक्ष के कार्यकर्ता नहीं हैं? अगर ये हैं और यदि नहीं भी हैं तो कतई सेना में भरती के योग्य नहीं हैं। इनसे सार्थक पत्र भजना जाना उचित है कि ये हिंसा में लिप्त नहीं थे। और कोई झूठा शोध पत्र या जाय तो इतनी कड़ी सजा दी जाय कि नज़िर बन जाय।

लेखक स्वयं चार वर्ष तक एम.सी.सी. के सचन प्रशिक्षण में रहा है। बटालियन से 'सी' सर्टिफिकेट में प्रथम रहा। सीधे कमीशन के योग्य था परंतु विवाहित हो जाने से नहीं जा सका। क्या इससे जीवन रुक गया? वह डॉक्टर बनना चाहता था, वह भी नहीं हो सका। क्या इससे सारे रास्ते बंद हो गये?

21-23 वर्ष तक वृं ही मान लीजिये कि शिक्षण-प्रशिक्षण चलता रहा और अंतिम चार वर्ष देश सेवा का गौरव मिला तथा रोजगार का भी। उसके बाद भी सरकार के अनेक रास्ते खुले हैं और जीवन के अनेक गैर सरकारी दरवाजों में प्रवेश हेतु सरकार उन्हें तन, मन, धन से सशक्त बना कर ही मैदान में छोड़ेगी। युवाओं को प्रमित मत करिये, प्रमित होकर ध्रम न फैलाइये। युवाओं का जीवन बन रहा है, बिगड़ नहीं रहा। मुक्त गगन उनके स्वागत में खड़ा है, उन्हें खुले मुक्त, स्वच्छंद होकर आकाश में उड़ान भरने दीजिये, अपनी सफलताओं का आलिंगन करने दीजिये। गर्व से कहिये, "मैं 'अग्निपथ योजना' का समर्थन करता हूँ, अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो, प्रशस्त पुण्य पथ है बड़े चलो, बड़े चलो।"

कर रहे हैं। इस योजना में तो शत प्रतिशत चयित अभ्यासियों को चार साल गहन प्रशिक्षण एवं अनुशासन में रह कर रोजगार भी मिलेगा। इन सैन्य प्रशिक्षितों में से सभी सेनाओं एवं उनके अंगों यथा स्थल, जल व नभ सेना में स्थायी नियुक्ति मिलेगी और उसके बाद शेष अर्द्ध सैन्य बल व पुलिस में खपेंगे। चार वर्ष बाद एक प्रशिक्षित सैन्य शक्ति तैयार होगी जो सेना तथा अर्द्ध सैन्य बल के अलावा सिविल सेवाओं के लिये भी सुरक्षित भंडार का काम करेगा। यह योजना सांप्रदायिक हिंसा, पत्थरबाजी, आतंकवाद आदि को जश बल, जन शक्ति बना कर रोक सकेगी। धीरे-धीरे युवा शक्ति गहन सैन्य प्रशिक्षण से सुसज्जित होकर देश की रक्षा हेतु किसी आपात स्थिति हेतु तैयार रहेगी। अमेरिका में ड्राफ्ट योजना प्रचलित रही और हर युवा अपनी शिक्षा के बाद अनिवार्य रूप से सैन्य प्रशिक्षण में रह कर ही आगे अपने भविष्य का निर्माण करता था। इजरायल में हर युवक व युवती सैन्य प्रशिक्षण से फोलाद हैं, टेक्सी व ट्रैक्टर भी चलता है?

हमारे यहाँ हर जगह दादागिरी व पट्टागिरी की परम्परा चल पड़ी है। राजनीति में पीढ़ी दर पीढ़ी पट्टा रहा। नौकरी में परिश्रम न करना पड़े। बस सरकारी नौकरी मिल जाये, उसका पट्टा मिल जाये, फिर काम तभी करें जब कुछ ऊपरी कमाई का जुगाड़ हो। क्या किसी भी निजी उद्योग में स्थायित्व अनिवार्य है? सरकारी पट्टा कितने लोगों को मिल पाता है। क्या गैर सरकारी नौकरी, व्यवसाय, उद्योग वाले लोग जीते नहीं हैं? फिर ऐसा क्या हुआ कि सारे देश को जलाया गया? बसों, रेलों, थानों व सत्ता पक्ष के राजनेताओं पर आक्रमण किया गया उन्हें जलाया गया, नष्ट किया गया। क्या यही युवा शक्ति है जो सेना में भरती होकर देश की रक्षा करेगी? क्या ये कॉलेज मेंटॉर्स और विपक्षी राजनेताओं के बहकावे में आये? क्या इनमें से अधिकांश विपक्ष के कार्यकर्ता नहीं हैं? अगर ये हैं और यदि नहीं भी हैं तो कतई सेना में भरती के योग्य नहीं हैं। इनसे सार्थक पत्र भजना जाना उचित है कि ये हिंसा में लिप्त नहीं थे। और कोई झूठा शोध पत्र या जाय तो इतनी कड़ी सजा दी जाय कि नज़िर बन जाय।

लेखक स्वयं चार वर्ष तक एम.सी.सी. के सचन प्रशिक्षण में रहा है। बटालियन से 'सी' सर्टिफिकेट में प्रथम रहा। सीधे कमीशन के योग्य था परंतु विवाहित हो जाने से नहीं जा सका। क्या इससे जीवन रुक गया? वह डॉक्टर बनना चाहता था, वह भी नहीं हो सका। क्या इससे सारे रास्ते बंद हो गये?

21-23 वर्ष तक वृं ही मान लीजिये कि शिक्षण-प्रशिक्षण चलता रहा और अंतिम चार वर्ष देश सेवा का गौरव मिला तथा रोजगार का भी। उसके बाद भी सरकार के अनेक रास्ते खुले हैं और जीवन के अनेक गैर सरकारी दरवाजों में प्रवेश हेतु सरकार उन्हें तन, मन, धन से सशक्त बना कर ही मैदान में छोड़ेगी। युवाओं को प्रमित मत करिये, प्रमित होकर ध्रम न फैलाइये। युवाओं का जीवन बन रहा है, बिगड़ नहीं रहा। मुक्त गगन उनके स्वागत में खड़ा है, उन्हें खुले मुक्त, स्वच्छंद होकर आकाश में उड़ान भरने दीजिये, अपनी सफलताओं का आलिंगन करने दीजिये। गर्व से कहिये, "मैं 'अग्निपथ योजना' का समर्थन करता हूँ, अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो, प्रशस्त पुण्य पथ है बड़े चलो, बड़े चलो।"

-अतिथि सम्पादक,  
कैलाश विहारी बाजपेयी,  
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

## राशिफल शनिवार 2 जुलाई, 2022

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, शनिवार, विक्रम संवत् 2079, आश्लेषा नक्षत्र रविवार प्रातः 6:30 तक, हर्षण योग दिन 11:32 तक, गर करण दिन 3:18 तक, चन्द्रमा कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मेष, बुध-वृष, गुरु-मीन, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

रविवार सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। भद्रा रात्रि 4:12 से रविवार सांय 5:07 तक है। बुध मिथुन राशि में प्रातः 9:42 पर प्रवेश करेगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:23 से 9:06 तक। चर 12:31 से 2:13 तक, लाभ-अमृत 2:13 से 5:38 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:41, सूर्यास्त 7:21

**मेष**  
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

**सिंह**  
परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में कार्य के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा।

**धनु**  
चन्द्रमा अग्रम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्ययधन सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

**वृष**  
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में अत्याधिक व्यस्तता अभी बनी रहेगी। नौकरों/सेवा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

**कन्या**  
अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लगेगी। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

**मकर**  
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**मिथुन**  
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित खोत से धन प्राप्त हो सकता है। आय के नवीन स्रोत सामने आयेगी। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

**तुला**  
व्यावसायिक कार्यों को लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें दूर होने लगेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लगेगी।

**कुंभ**  
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

**कर्क**  
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बढ़ेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी।

**वृश्चिक**  
धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

**मीन**  
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक सफलता से मनबल बढ़ेगा। आर्थिक कार्यों से परेशानी का सामना कर पा सकते हैं।

## भरो होय सो रीतियो, रीतो होय भराय

नए भारत में इतिहासकारों को अपशब्द कहने की एक नई परंपरा स्थापित हुई है और वह भी ज्यादातर उन लोगों द्वारा जिन्होंने जीवन में कभी गंभीर साहित्य का कोई सार्थक अध्ययन नहीं किया है। पर ध्यान रहे कि इतिहासकार तथ्यों पर आधारित बात ही सामने रखेगा। इसीलिए इतिहास चुभता है और इतिहासकार आरोपित होता है पर फिर भी लिखने का साहस करता है।

बात 1723 से 1775 के बीच की है जब आज के नेपाल के एक भाग को गोरखा राज्य कहा जाता था और इस छोटी सी रियासत का राजा था पृथ्वी नारायण शाह। वह एक महत्वाकांक्षी राजा था जिसने पड़ोसी राज्य काठमांडू, पाटन और भद्रगांव पर अधिकार जमा कर एक बड़ा राज्य स्थापित किया था। आगे चलकर उसने हिमालय की तराई वाले भागों पर अधिकार किया, शिवालयक पर्वत श्रृंखला, कुमाऊं, गढ़वाल, शिमला, सिक्किम का कुछ भाग, तिब्बत की कई वादियाँ अपने

आधिपत्य में करते हुए पंजाब की सीमा तक एक विशाल साम्राज्य स्थापित किया। पृथ्वी नारायण शाह की मृत्यु के कोई पांच साल बाद गुजरांवाला के सरदार महासिंह सुकरचकिया के यहां रणजीत सिंह का जन्म हुआ।

उन्नीसवीं सदी के प्रारंभिक काल में गोरखा और सिख दोनों ही अपनी शक्ति के शिखर पर थे। रणजीत सिंह के समय कांगड़ा में कठोक राजपूत संसार चंद का राज था। संसार चंद ने होशियारपुर पर अधिकार जमाने की कोशिश की तो रणजीत सिंह से बुरी तरह परेश होकर सिख साम्राज्य के सामंत बन कर रहना पड़ा।

उधर पृथ्वी नारायण थापा की मृत्यु के बाद उसकी जगह अमर सिंह थापा नेपाल का राजा बना। उसने चंबा, नूरपुर, कोटला जसरोटा, मण्डी और कुल्लू आदि पर अधिकार जमाने हुए सतलुज नदी पर कब्जा जमाने की कोशिश की। संसार चंद जब फिर गया तो कांगड़ा किंगडम रणजीत सिंह को उपहार में देकर



डॉ रामावतार शर्मा

थापा से अपनी रक्षा कराई। गणेश घाटी में चले लंबे युद्ध में रणजीत सिंह ने थापा की सेना का रसद मार्ग बाधित कर दिया। भूख और प्यास से प्रताड़ित गोरखा सेना को रणजीत सिंह ने एक सुरक्षित मार्ग से वापस नेपाल जाने दिया क्योंकि सिख इन बहादुर सैनिकों को मारना नहीं चाहते थे। इस बात का आगे चल कर सिख साम्राज्य को बड़ा फायदा हुआ जब गोरखा रणजीत सिंह की सेना के अभिन्न अंग

बने, कई युद्धों में उनकी विजय दिलवाई। चूंकि रणजीत सिंह की राजधानी लाहौर थी तो नेपाल में ये सिपाही 'लहुरिया' कहलाए।

आगे चल कर 1814-16 में अंग्रेजों और गोरखा लोगों का युद्ध हुआ और फिर 1846 और 1848-49 में अंग्रेजों एवम सिखों के बीच युद्ध होने के फलस्वरूप भारत के इन हिस्सों में अंग्रेजों का राज स्थापित हो गया। अंग्रेजों ने भी सिख और गोरखा सैनिकों की बहादुरी का सम्मान करते हुए दोनों ही जगह बड़ी हिंसा नहीं की, दोनों को अपनी सेना में विशेष सम्मान के साथ शामिल किया। गोरखा आज भी ब्रिटेन की सेना का गर्व हैं। अब यह जानना रोचक हो सकता है कि आगे चलकर इन तीनों के वंशजों का क्या हुआ। कांगड़ा के राजा संसार चंद कोटोक के पुत्र महाराज अशोकचंद्र राजा ही बने रहे जब तक भारत आजाद नहीं हुआ। थापा लोग समय की मिट्टी में कब कहां अपना महत्व खो बैठे इसमें अब किसी

की कोई रचि नहीं है। महाबली रणजीत सिंह के पुत्र दिलीप सिंह पेरिस के एक निम्न स्तरिय होटल में कंगाली से जुड़ते मृत पाए गए थे उदाहरण बताते हैं कि आज जिनकी दुंदुभी बज रही होती है कल वो सत्राटे में गुम भी हो सकते हैं। सत्ता का नशा विचित्र होता है लेकिन सत्ता में हवा का रुख बदलने का दावा करने वाले खुद हवा हो जाते हैं। आज हम भारत में राजनीति पर खड़े लोग आलाचकों को बर्दाश्त नहीं करते हैं और प्रताड़ित करते हैं। ऐसा होता रहा है और आगे भी होता ही रहेगा। अनुभव इसी तरफ तो इशारा करता रहता है। संत कबीर ने क्या खूब कहा है:-

'भरो होय सो रीतियो, रीतो होय भराय।

रीतो भरो न जाणियो, अनुभव सो ही कहाय'।

डॉ रामावतार शर्मा,  
चिकित्सक एवं लेखक

## भरतपुर में रथयात्रा को खींचने के लिए श्रद्धालुओं का जनसैलाब उमड़ा

भरतपुर, (निर्स)। भरतपुर में कोविड के दो साल बाद शुक्रवार को उड़ीसा की जगन्नाथ रथयात्रा की तर्ज पर शहर के मुख्य बाजारों से होते हुए रथयात्रा निकाली गई। ठाकुरजी के लिए मोरारा के फूलों का रथ सजाया गया जिसमें भगवान श्री जगन्नाथ जी विराजमान शहर भ्रमण को निकले। इस अवसर पर मंदिर में फूलबंगला झांकी सजाई गई। रथ यात्रा में शहनाई, बैडबाजों, ढोल नागाड़े की पुनः पर झांकियां निकाली गई। भगवान श्रीजगन्नाथ की रथयात्रा के दौरान श्रद्धालु नाचते गाते चल रहे थे। तो वहीं समिति की ओर से श्रद्धालुओं को खिचड़ी का प्रसाद वितरित किया गया।

भगवान श्री जगन्नाथ रथयात्रा को खींचने के लिए श्रद्धालुओं का जनसैलाब उमड़ा पड़ा। रथयात्रा को खींचने के लिए लोगों की भीड़ उमड़

पड़ी। रथयात्रा का संचालन किला बांके बिहारी मंदिर प्रबंधन की ओर से किया गया। रथयात्रा बिहारीजी मंदिर से प्रारंभ होकर शहर के गोपालगढ़, मथुरा गेट, चौबुर्जा, कोतवाली, वासन गेट होते हुए नई मंडी पर समाप्त हुई।

रथयात्रा का लोगो ने आरती उतारकर और प्रसाद लगाकर स्वागत किया। भगवान श्री जगन्नाथ जी की एक झलक पाने के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ बाजारों में जमा रही। जैसे ही भगवान श्री जगन्नाथ जी की रथयात्रा सामने पहुंची तो लोग श्री जगन्नाथ जी की आरती उतारने के लिए आतुर रहे और रथयात्रा को खींचने के लिए आगे पहुंचे। तो वहीं बाजारों में भगवान श्री जगन्नाथ रथयात्रा में चलने वाले श्रद्धालुओं को भीड़ जलपान, आइसक्रीम, मिठाई, शर्बत आम, शिंकड़ी, तरह तरह के



भगवान श्री जगन्नाथ जी के शहर भ्रमण के दौरान भीड़ उमड़ी।

सुल्पाहार दिए।

इस अवसर पर जगह-जगह भी भगवान श्री जगन्नाथ रथयात्रा समिति द्वारा अग्रवाल धर्मशाला खिचनी घाट कार्यक्रम आयोजित किया

गया, जिसमें पंचामृत अभिषेक होगा तथा 56 भोग की झांकी सजाई गई तथा वृंदावन की मंडली द्वारा संकीर्तन किया गया। बाद में दात, भात प्रसाद का वितरण किया गया।

## अनदेखी के चलते धुंधला रहा है चिड़ावा की हवेलियों में समाया इतिहास

चिड़ावा, (निर्स)। इतिहास को समाये चिड़ावा की प्राचीन हवेलियों के मालिक कमाने के लिए बाहर निकले और फिर प्रवासी ही बन गए। एक-दो हवेलियों को छोड़ कर ज्यादातर हवेलियाँ ऐसी हैं जिनकी सार-संभाल नहीं हो रही। ऐसे में वे जर्जर हो चुकी हैं और गिरने के कगार पर हैं।

इन हवेलियों में सैकड़ों साल का इतिहास समाया है। इनमें ज्यादातर हवेलियाँ 100 से 200 साल तक पुरानी हैं। इन हवेलियों को उस समय परिवार की स्थिति और शाही अंदाज

दिखाने के लिए सेठ-साहूकारों द्वारा बनवाया गया था। एक दौर ऐसा था जब शानो-शौकत दिखाने का जरिया ये हवेलियाँ बन गईं। जब सेठ-साहूकार इन हवेलियों से बाहर निकलते थे तो उनका अंदाज भी शाही रहता था।

हवेलियों की बनावट उस समय सामूहिक परिवार की अवधारणा को लेकर किया गया था। एक हवेली में कई कमरे होते थे। इन कमरों की ऊंचाई भी करीब 15 से 20 फुट रखी गई। हवेलियों में शाल के पौधे लकड़ियों

को गाटर की जगह काम में लिया गया है। प्राचीन हवेलियों की खासियत उनके बाहर खास शैली में की गई चित्रकारी भी है। माटी से बनाए गए कलर से की गई फ्रेस्को के पेंटिंग आज भी कई हवेलियों पर कायम हैं। इनमें भारत के पौराणिक इतिहास से लेकर राजा-महाराजाओं के समय को भी उल्लेख गया है। ज्यादातर हवेलियों के मालिकों ने व्यापार के लिए बाहरी इलाकों का रुख किया। कोलकाता, मुंबई, हैदराबाद, दिल्ली सहित देशभर में विभिन्न इलाकों में उद्योग धंधे

स्थापित कर यहां के उद्योगपतियों ने काफी नाम कमाया है।

प्राचीन इतिहास से रूबरू करने वाली हवेलियों के साथ ही कई मंदिर भी स्थापत्य कला के जेजोड नमूने हैं। लेकिन ये भी फिलहाल अनदेखी के चलते धीरे-धीरे इतिहास में समाते नजर आ रहे हैं। भूमाफिय द्वारा कुछ हवेलियों को तोड़ भी दिया गया है। सरकार प्रवासीजनों से बात कर इन हवेलियों की देखरेख का जिम्मा लेकर इन्हें पर्यटन स्पॉट के रूप में काम में ले सकती है।

## भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पी-

## डॉ. भीमराव अम्बेडकर

भारत का संविधान विश्व के सभी संविधानों की प्रमुख विशेषताओं को समेटे हुए पूरी तरह भारतीयता के रंग में रंगा हुआ है। जिसमें नागरिकों को समानता और सह-अस्तित्व की गारंटी देकर, भारत को प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य घोषित करता है।

24 मार्च, 1946 को कैबिनेट मिशन भारत आया और मिशन की योजना के आधार पर संविधान सभा की स्थापना हुई। संविधान सभा के लिए डॉ. अम्बेडकर भी निर्वाचित हुए। 29 अगस्त, 1947 को संविधान प्रारूप समिति बनाी। जिसके चेयरमैन डॉ. अम्बेडकर को बनाया गया। भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, ब्रिटिश संसद ने 18 जुलाई, 1947 को पारित कर दिया तथा 3 जून 1946 से संविधान सभा ही भारत की प्रथम संसद बनाी। 15 अगस्त 1947 को भारत एक स्वतंत्र एवं संप्रभुता-सम्पन्न राष्ट्र बन गया।

जुलाई 1947 में पं. नेहरू ने सरदार पटेल एवं एस.के. पाटिल से सलाह मांशुचित करके डॉ. अम्बेडकर को अपनी कैबिनेट में विधि मंत्री बनाने का प्रस्ताव रखा, जो कि उन्होंने स्वीकार कर लिया। हमारा देश 15 अगस्त 1947 को आजाद हो गया। हालांकि संघीय भारत के काफी बड़े हिस्से में साम्प्रदायिक दंगे हो रहे थे। 29 अगस्त, 1947 को संविधान सभा ने स्वतंत्र भारत के संविधान मसौदा निर्माण समिति के नामों की घोषणा कर दी थी। जिसमें कि डॉ. अम्बेडकर को प्रारूप समिति का अध्यक्ष बनाया गया।

सदस्यों में सर अल्लादी कृष्णास्वामी, सर बी.एन. राय, श्री सत्यदीप सा. सादुल्लाह, सर एन. गोपालस्वामी आयरंग, डॉ. के.एम. मुंशी, सर बी.एल मित्र तथा श्री डी.पी. खेतान चुने गये। इस प्रकार मसौदा समिति में कुल आठ

सदस्य थे। इसके बाद डॉ. अम्बेडकर भारत के संविधान प्रारूप निर्माण कार्य में पूरी तरह व्यस्त हो गये। 29 अगस्त 1947 से लगातार संविधान निर्माण के महति कार्य को बड़ी लगन, उत्साह एवं बुद्धिमता से दिन-रात करते रहे, तथा 16 फरवरी 1948 तक 171 दिन में संविधान का प्रारूप तैयार कर दिया।

संविधान सभा द्वारा 26 नवम्बर 1949 को अंतिम रूप से स्वीकार कर पास कर दिया गया तथा 26 जनवरी 1950 से लागू किया गया। संविधान की प्रस्तावना में घोषणा की गई है कि "हम भारत के लोग, भारत को सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी, धर्म निरपेक्ष, लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्र प्रतिष्ठा और अवसर की समानता प्राप्त करने के लिए और उन सभी में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखण्डता को सुनिश्चित करने वाली संघुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर आज दिनांक 26 नवम्बर 1949 को इस संविधान को अंगीकृत अधिनियमित और आन्वर्षित करते हैं। संविधान की प्रस्तावना वर्तमान समाज में अन्तर्निहित सामाजिक और आर्थिक सिद्धान्तों के विकास का सार प्रस्तुत करती है।

25 नवम्बर, 1949 को डॉ. अम्बेडकर जो कि इसके मुख्य निर्माता थे, तीसरे पटन के बाद संविधान सभा में इस पर बहस का जवाब देने के लिए खड़े हुए। उन्होंने कहा मैं केवल दलित जातियों के हितों के लिये आया था। हैरत है, जब मुझे संविधान की ड्राफ्टिंग कमेटी का चेयरमैन चुना गया। प्रसन्नता हुई कि मुझे देश की सेवा करने का एक अवसर मिल गया है। 26 जनवरी,



यादरामसिंह यादव

1950 को संविधान को लागू करके देश पूर्ण स्वतंत्र होगा। क्या भारत की जनता, अपने मत, महजब या स्वाथं की अपेक्षा देश को अधिक महत्व देगी। अपने रक्त की अन्तिम बूंद देकर भी हमें अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करनी चाहिए। उन्होंने अपने चालीस मिनट के सारगर्भित भाषण में भारत की समस्त जनता से स्पष्ट शब्दों में अपील की, कि सच्चे अर्थों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप से जाति व्यवस्था को खत्म कर दो। पूरी संविधान सभा जिसमें प्रधानमंत्री पं. नेहरू भी उपस्थित थे, ने शान्तिपूर्वक सुना और जब भाषण खत्म हुआ तो सभी सदस्यों ने तालियां बजाकर उनका आभार व्यक्त किया। डॉ. अम्बेडकर ने भारत की जनता को सावधान करते हुए कहा कि 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू करके देश पूर्ण स्वतंत्र होगा लेकिन राजनीति में हम एक व्यक्ति एक वोट तथा इसकी एक वैल्यू को महत्व देंगे। परन्तु सामाजिक व आर्थिक जीवन में हम एक व्यक्ति एक वैल्यू को अस्वीकार करेंगे। डॉ. अम्बेडकर ने संविधान सभा के

सदस्यों की शंकाओं का जवाब, हर विषय पर बड़ी विज्ञतापूर्वक दिया।

संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्रप्रसाद प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. अम्बेडकर के कार्य से प्रभावित होकर संविधान सभा में बोले, डॉ. अम्बेडकर को कानून, समाजशास्त्र तथा आर्थिक क्षेत्रों में हमारे देश के इतिहास, मानव विज्ञान व संसार के संविधानों की उत्पत्ति व विकास के विशाल ज्ञान पर अधिकार है।

भारत ही नहीं विश्व के प्रमुख समाचार पत्रों ने एवं देश के बुद्धिजीवियों तथा संविधान सभा के सदस्यों ने डॉ. अम्बेडकर के संविधान प्रारूप निर्माण कार्य की भूरी-भूरि प्रशंसा की। उन्हें आधुनिक मनु की तथा बीसवीं सदी के स्मृतिकार एवं संविधान के शिल्पकार की उपमाओं से अलंकृत कर सम्मान दिया। संविधान प्रारूप सम्बन्धी कार्य के लिए सर्वप्रथम संविधान सभा के विशेषज्ञ सर अल्ला